Sita's Message

सीता का सन्देश

निर्मला शुक्ल, फ्रीमांट ,कैलिफोर्निया (Nirmala Shukla, Freemont, CA)

हो रही चर्चा अवध की गलियों में
सिन्धू पर सेतू बनाकर धन्य हैं राम।
पर उन्हें यह क्या हुआ रावण वध कर
सीता को ले आये निज धाम॥

बलपूर्वक बिठाकर सीता को अपनी गोद में
ले गया लंका, उसका करके अपहरण।
क्रीडा कानन की अशोक वाटिका में
रखा सीता को बन्दी बनाकर रावण॥

सीता की पवित्रता पर शंका है
अतः करते हैं राम को धिक्कार।
उन्होंने सीता को रानी के रूप में
कैसे कर लिया है स्वीकार॥

विचलित हुए श्रीराम इस सन्देश से
पर उन्हें ध्यान आया राजा का धर्म।
प्रजा को सुखी रखना कष्ट पाकर भी
उन्हें ऐसा करना चाहिये कर्म॥

उन्होंने सारी बातें विस्तार से बताने
अनुज लक्ष्मण को बुलाया।
"हे लक्ष्मण, सीता को वन में छोड आओ।"
यह आज्ञा बडे दुःखी मन से सुनाया॥

लक्ष्मण चौंके, बोले, "भैया, क्या
अभी पूरे नहीं हुये भाभी के दुःख?
क्या चौदह वर्षो का बनवास पर्याप्त नहीं
पुनः उन्हें वन भेज कौन पयेगा सुख?"

राम बोले, "लक्ष्मण तुम मेरी आज्ञा का पालन करो,
ज्ञात है, सीता अग्नि परीक्षा में सिद्ध हुई थी पवित्र।
प्रजा की सन्तुष्टि के लिये सीता निर्वासित होगी,
यद्यपि उसका निष्कलंक है चरित्र॥"

राम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण ने
दुखी मन से सुमन्त्र से रथ मंगाया।
फिर सीता के महल में पहुँच कर
उनके चरणों में शीश झुकाया॥

सीता बोली, "परिवार में सब कुशल तो हैं
लक्ष्मण, अचानक कैसे हुआ तुम्हारा आना?"
"श्रीराम ने मुझसे कहा है, भाभी,
आपको ऋषि आश्रम है देखने जाना॥"

"सुमन्त्र रथ लिये खडे हैं तैयार," लक्ष्मण ने कहा।
"हाँ, लक्ष्मण, मैंने राम से व्यक्त की थी अपनी कामना।"
सीता बोली, "मैं वस्त्र-आभूषण बाँटूंगी
जब मेरा ऋषि-पत्नियों से होगा सामना॥"

लक्ष्मण के साथ पीछे सीता बैठीं थीं
सुमन्त्र तीव्र गति से हाँक रहे थे रथ।
लक्ष्मण की आँखों से अश्रु-धारा बह रही,
धुंधला हो रहा था सारा पथ॥

सीता ने कहा, "लक्ष्मण, क्यों तुम रो रहे ?
मुझे अपने दुःख का बताओ कारण।"
"भाभी, श्रीराम ने तुम्हें वन में निष्कासन दिया,
केवल यही है प्रजा की शंका का निवारण॥

तुम पवित्र हो, पतिव्रता हो
इसमें कोई संशय नही राम के मन में।
वियोग से अति दुखी हैं राम,
प्रजा को खुश करने भेजा तुम्हें वन में॥

सीता भी रो पडी, बोलीं, "लक्ष्मण, देना यह संदेश
राम को कि वे जन्म जन्मान्तर में हों मेरे पति।
पर प्रभु से प्रार्थना है कि कभी न हो
पति-वियोग या रावण के आतंक से दुर्गति।